''निर्धनों को स्मरण रखें'' (20:1-6)

प्रेरितों 20 अध्याय की पहली छह आयतें पढ़ने पर पता चलता है कि इनमें पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा को पूरा करने के लिए उसके यूनान जाने और आने का संक्षिप्त विवरण है:

> जब हुल्लड़ थम गया, तो पौलुस ने चेलों को बुलवाकर समझाया, और उन से विदा होकर मकिदुनिया की ओर चल दिया। और उस सारे देश में से होकर और उन्हें बहुत समझाकर, वह यूनान में आया। जब तीन महीने रहकर जहाज पर सूरिया की ओर जाने पर था, तो यहूदी उस की घात में लगे, इसलिए उसने यह सलाह की कि मकिदुनिया होकर लौट जाए। बिरीया के पुरुस का पुत्र सोपत्रुस और थिस्सलुनीकियों में से अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस और दिरबे का गयुस, और तीमुथियुस और आसिया का तुखिकुस और त्रुफिमुस तक उसके साथ हो लिए। वे आगे जाकर त्रोआस में हमारी बाट जोहते रहे। और हम अखमीरी रोटी के दिनों के बाद फिलिप्पी से जहाज पर चढ़कर पांच दिन में त्रोआस में उन के पास पहुंचे (20:1-6क)।

शास्त्र की अन्य आयतों की तरह जो पहले कम महत्वपूर्ण और शायद उबाऊ लगती हैं, का गहराई से अध्ययन करने पर महान सत्य प्राप्त होते हैं।

इन छह आयतों के समय का पुनर्निर्धारण करने पर,[1] हम पाते हैं कि शास्त्र के इस अंश में कम से कम एक ''वर्ष की यात्रा तथा जोखिम'' है। उस समय के दौरान पौलुस की मुख्य रुचियों में से कुछ को अध्याय 20 के अन्त में उसके शब्दों में संक्षिप्त किया जा सकता है: ''निर्बलों को सम्भालना, और प्रभु यीशु की बातें स्मरण रखना, अवश्य है, कि उसने आप ही कहा है; कि लेने से देना धन्य है'' (आयत 35ख)। वहां पर, ''निर्बल'' विशेष तौर पर ''यरूशलेम के पवित्र लोगों के कंगालों''[2] (रोमियों 15:26) को कहा गया था।

यरूशलेम की कलीसिया में आरम्भ से ही जरूरतमंद सदस्य थे। इसकी स्थापना के थोड़ी देर बाद, जिन सदस्यों के पास सम्पत्ति थी, उन्होंने उन सदस्यों को जिनके पास करने

के लिए कुछ नहीं था, अपनी सम्पत्ति में से दे दिया था (प्रेरितों 2:44, 45; 4:32-35; 6:1)। जब अकाल पड़ा, तो अन्ताकिया की कलीसिया ने यरूशलेम और यहूदिया में आवश्यक सहायता भेजी (11:27-30; 12:25)। जब पौलुस और बरनबास विशेष तौर पर यरूशलेम गए, तो पतरस और अन्य अगुओं ने उन्हें ''निर्धनों को स्मरण रखने'' के लिए कहा, विशेषकर यहूदी निर्धन मसीहियों को (विशेषकर जो यरूशलेम में थे)।[3] पौलुस ने कहा कि ''इसी काम के करने का मैं आप भी यत्न कर रहा था'' (गलतियों 2:10)।

दूसरी या तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान, पौलुस ने यरूशलेम की कलीसिया के लिए चन्दा इकट्ठा करने का विचार किया था।[4] उसे आशा थी कि यहूदियों के लिए अन्यजातियों से प्रेम-भेंट से कलीसिया के इन दोनों गुटों के आपसी सम्बन्ध मजबूत होंगे (2 कुरिन्थियों 9:11-14)। तीसरी यात्रा में, पौलुस ने चन्दा इकट्ठा करने के लिए काम किया (1 कुरिन्थियों 16:1, 2; 2 कुरिन्थियों 8:10)। अब वह चन्दे के रूप में इकट्ठा हुआ धन लेकर यरूशलेम जाने के लिए तैयार था।

प्रेरितों 20:1-6 की पृष्ठभूमि को खोजते हुए इस उद्देश्य को मन में रखें।

चिन्ता (20:1)

आयत 1 चिन्ता से भरी हुई है: ''जब हुल्लड़ थम गया, तो पौलुस ने चेलों को बुलवाकर समझाया, और उनसे विदा होकर मकिदुनिया की ओर चल दिया।'' पहले, इफिसुस से निकलने के समय वहां के मसीहियों के लिए चिन्ता थी। ''पौलुस ने चेलों को बुलवाकर'' शायद यह देखने के लिए कि दंगे में किसी को चोट न लगी हो, या हो सकता है कि उन्हें यह बताने के लिए कि वह रंगशाला में क्यों नहीं गया था, और निश्चय ही अपने जाने से पहले उन्हें उत्साहित करने के लिए बुलाया हो। दूसरी चिन्ता, जैसा कि पहले ही सुझाव दिया गया है, ''यरूशलेम के पवित्र लोगों के कंगालों'' के लिए थी। पौलुस जरूरतमंदों के लिए चन्दा इकट्ठा करने के लिए मकिदुनिया की ओर जा रहा था। परन्तु किसी और चिन्ता ने पौलुस की रातों की नींद उड़ा दी थी। यूनान की ओर जाने का उसका एक और कारण वे समस्याएं थीं जिनसे कुरिन्थुस की कलीसिया के खत्म होने का भय था।

हमने अपने पिछले पाठ में पढ़ा था कि पौलुस ने तीमुथियुस द्वारा आरम्भ किए काम को आगे बढ़ाने के लिए तीतुस को कुरिन्थुस में भेजा (2 कुरिन्थियों 2:12, 13; 7:5-7; 8:6, 23)। तीतुस ने आकर पौलुस को बताना था कि कुरिन्थियों का क्या हाल है। स्पष्टत:, मार्ग विवरण के अनुसार तीतुस को कुरिन्थुस से मकिदुनिया, फिर त्रोआस और अन्त में इफिसुस में जाना था। मकिदुनिया जाते हुए, इफिसुस से निकलकर पौलुस का पहला ठहराव त्रोआस था (2 कुरिन्थियों 2:12) जहां उसे तीतुस से पूर्व नियोजित भेंट की उम्मीद थी।

त्रोआस एजियन सागर[5] पर एक बन्दरगाह थी जहां पहले पौलुस को मकिदुनिया के लिए बुलाहट हुई थी (प्रेरितों 16:8-10)। उस समय थोड़ी देर वहां जाने के कारण पौलुस ने थोड़ा सा या कुछ भी प्रचार नहीं किया था। परन्तु, इस बार उसके लिए ''एक द्वार खोल दिया'' गया था (2 कुरिन्थियों 2:12); शहर के लोग सुसमाचार को मानने के

लिए तैयार थे। पौलुस ने इस अवसर का उपयोग अपनी आदत के विपरीत किया।[6] उसे कुरिन्थुस की इतनी चिन्ता थी कि वह स्थिति का लाभ उठाने के लिए रुक नहीं पाया। बाद में उसने लिखा: ''मेरे मन में चैन न मिला, इसलिए कि मैंने अपने भाई तीतुस को नहीं पाया; सो उनसे [त्रोआस के लोगों से] विदा होकर मैं मकिदुनिया की ओर चला गया'' (2 कुरिन्थियों 2:13)।

पौलुस को उम्मीद थी कि वह तीतुस को मकिदुनिया में रोक लेगा परन्तु तीतुस वहां नहीं था। उस जवान प्रचारक की प्रतीक्षा करते हुए, पौलुस ने यरूशलेम के लिए चन्दा इकट्ठा करने का काम किया और मकिदुनिया के मसीहियों की उदारता को देखकर वह आनन्द से आश्चर्यचकित हो गया (2 कुरिन्थियों 8:1-5), परन्तु अभी भी उसके मन में बेचैनी थी। बाद में उसने कहा, ''क्योंकि जब हम मकिदुनिया में आए, तब भी हमारे शरीर को चैन नहीं मिला, परन्तु हम चारों ओर से क्लेश पाते थे; बाहर लड़ाइयां थीं, भीतर भयंकर बातें थीं'' (2 कुरिन्थियों 7:5)। ''लड़ाइयां'' सम्भवत: उन यहूदियों के साथ थीं जिन्होंने उसे थिस्सलुनीके और बिरीया से भगाया था। अन्य ''भयंकर बातें'' वे थीं जिनका उसे भय था कि कुरिन्थी मसीहियों ने बड़ी धीमी प्रतिक्रिया दी थी। (पौलुस पर भी बुरे दिन आये थे; आप पर बुरे दिन आ जाने पर प्रभु आपको अकेला नहीं छोड़ेगा।)

अन्तत: तीतुस अच्छी ख़बर लेकर आ गया। आमतौर पर, कुरिन्थुस की कलीसिया पौलुस की ताड़ना और चेतावनियों को मानती थी। पौलुस ने अपनी राहत की बात इन शब्दों में लिखी:

> तौभी दीनों को शान्ति देने वाले परमेश्वर ने तीतुस के आने से हम को शान्ति दी। और न केवल उसके आने से परन्तु उसकी उस शान्ति से भी, जो उसको तुम्हारी ओर से मिली थी; और उसने तुम्हारी लालसा और तुम्हारे दुख और मेरे लिए तुम्हारी धुन का समाचार हमें सुनाया, जिस से मुझे और भी आनन्द हुआ (2 कुरिन्थियों 7:6, 7)।

पौलुस ने वह पत्र लिखवाकर जिसे हम 2 कुरिन्थियों कहते हैं[7], दो अन्य लोगों के साथ तीतुस के हाथ कुरिन्थुस में भेज दिया (2 कुरिन्थियों 8:16-24)।[8]

अपने भाइयों के लिए पौलुस की चिन्ता की तीव्रता से प्रभावित हुए बिना हम 2 कुरिन्थियों नहीं पढ़ सकते। उसके मन को ''चैन न मिला'' (2:13; 7:5); उसे कलीसिया में पाई जाने वाली ''भयंकर बातें'' सता रही थीं (7:5)। वह ''दीन'' (7:6) था। हमें भी अपने भाइयों के प्रति गहरी चिन्ता होनी चाहिए अर्थात जब उन्हें किसी भौतिक वस्तु की आवश्यकता हो (जैसे पौलुस यरूशलेम के मसीहियों के विषय में चिन्तित था) और जब उनमें आत्मिकता की कमी हो (जैसे कुरिन्थियों की कमियों से पौलुस दुखी हुआ)! पौलुस के शब्दों में हम सब के लिए ताड़ना है:

ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें। इसलिए यदि एक अंग दु:ख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दु:ख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं। इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो (1 कुरिन्थियों 12:25-27)।

चन्दा (20:2-4)

पौलुस का 2 कुरिन्थियों लिखने का एक उद्देश्य यरूशलेम के लिए चन्दा इकट्ठा करने के लिए भाइयों को उत्साहित करना था। पौलुस ने कुरिन्थियों से मकिदुनियों की उदारता की नकल करने का आग्रह किया (अध्याय 8 तथा 9)।

पत्र भेजने के बाद पौलुस ने कुछ समय मकिदुनिया में प्रचार करने और शिक्षा देने में लगाया। मैं फिलिप्पी, थिस्सलुनीके, बिरीया और अन्य स्थानों पर मसीही लोगों के साथ दोबारा मिलने के उसके आनन्द की कल्पना कर सकता हूं। इस दौरान, वह इल्लुरिकुम के इलाके में प्रचार करने के लिए उत्तर-पश्चिम की ओर भी गया होगा (रोमियों 15:19)।[9] लूका ने केवल इतना ही लिखा कि ''उस सारे देश में से होकर और उन्हें बहुत समझाकर,[10] वह यूनान [अर्थात, अखया] में आया'' (प्रेरितों 20:2)। फिर उसने टिप्पणी की कि वह वहां ''तीन महीने''[11] (आयत 3क) रहा। पौलुस ने कुरिन्थुस में तीन महीनों का यह समय गयुस नाम के एक भाई के घर अतिथि के रूप में बिताया[12] (रोमियों 16:23)।

कुरिन्थुस में रहते हुए पौलुस ने अपनी सर्वोत्तम पुस्तक, रोमियों के नाम पत्री लिखी।[13] यह पत्री पौलुस ने मुख्यत:, रोम जाने के पूर्वानुमान में लिखी थी (रोमियों 1:9-15; 15:22-29)। परन्तु, पौलुस उन ख़तरों के बारे में जानता था जो यरूशलेम पहुंचने पर उस पर आने वाले थे (रोमियों 15:31; देखिए प्रेरितों 20:22-25; 21:13, 14)। रोमियों के नाम लिखकर उसने साम्राज्य के अन्दर ''मसीहियत की थोड़ी सी बात'' बतानी थी, चाहे स्वयं वह वहां नहीं पहुंचता।

पौलुस द्वारा रोमियों के नाम पत्री लिखे जाने के समय कुरिन्थुस में यरूशलेम के लिए चन्दे के विषय में सब कुछ ठीक-ठाक था। उसने कहा कि अखया के मसीही लोगों को ''यह अच्छा लगा कि यरूशलेम के पवित्र लोगों के कंगालों के लिए कुछ चंदा करें'' (15:26)।

सम्भवत: प्रेम-भेंट में योगदान देने वाली विभिन्न कलीसियाओं के प्रतिनिधि पौलुस के साथ शामिल हो गए थे (प्रेरितों 20:4)।[14] ''कलीसियाओं के भेजे हुए'' (2 कुरिन्थियों 8:23) इन लोगों द्वारा अपनी मण्डलियों की ओर से दी गई भेंटों को इकट्ठा करने से काफी चंदा हो गया था।

मैंने पहले कहा कि हमें मसीह में अपने भाइयों के लिए चिन्ता करनी चाहिए।

मकिदुनिया, अखया, एशिया और गलतिया के मसीहियों के उदाहरण हमें सिखाते हैं कि उनमें हमारी दिलचस्पी दिखाई भी देनी चाहिए। सदा व्यावहारिक बात करने वाले याकूब ने इसी ओर ध्यान दिलाते हुए यह प्रश्न पूछा: ''यदि कोई भाई या बहिन नङ्गे उघाड़े हों, और उन्हें प्रतिदिन भोजन की घटी हो। और तुम में से कोई उनसे कहे, कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो पर जो वस्तुएं देह के लिए आवश्यक हैं वह उन्हें न दे, तो क्या लाभ?'' (याकूब 2:15, 16)।

सावधान (20:4)

प्रेरितों 20:4 में जिन सात लोगों के नाम दर्ज हैं, वे थे ''बिरीया के पुरुस का पुत्र सोपत्रुस[15] और थिस्सलुनीकियों में से अरिस्तर्खुस[16] और सिकुन्दुस[17] और दिरबे का गयुस,[18] और तीमुथियुस और आसिया का तुखिकुस[19] और त्रुफिमुस[20] ...।'' मकिदुनिया की कलीसियाओं का प्रतिनिधित्व सोपत्रुस, अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस कर रहे थे। गयुस और तीमुथियुस गलतिया की कलीसियाओं के प्रतिनिधि थे। आसिया की कलीसियाओं का प्रतिनिधित्व तुखिकुस और त्रुफिमुस कर रहे थे।[21] चन्दा लेने के लिए पौलुस के साथ इन सातों के अलावा अन्य लोग भी गए, परन्तु क्यों?

कई लोगों ने सुझाव दिया है कि पौलुस द्वारा थोड़ा सा धन ले जाते समय ये लोग उसके अंगरक्षक थे।[22] अन्य लोगों का अनुमान है कि चन्दा (जो सिक्कों के रूप में होगा) इन लोगों के पास थोड़ा-थोड़ा करके दे दिया होगा, ताकि यह पता न चले कि वे इतनी बड़ी राशि ले जा रहे थे। एक और सम्भावना यह भी है कि पौलुस यहूदी मसीहियों को प्रभावित करने के लिए और उन्हें इस बात से आनन्दित करने के लिए कि सुसमाचार का प्रचार अन्यजातियों में भी हो रहा था, अपने साथ अन्यजाति मसीहियों को प्रमुख उदाहरण के रूप में ले गया।[23]

ये विचार मान्य हों या न हों, परन्तु जो कुछ भी प्रकट किया गया वह यह है कि इन लोगों का चयन पौलुस की बिनती पर इस सम्भावना को दूर करने के लिए किया गया था कि उस चन्दे से उसे व्यक्तिगत लाभ होगा। चन्दे के विषय में कुरिन्थियों को लिखकर उसने कहा: ''और जब मैं [वहां] आऊंगा, तो जिन्हें तुम चाहोगे, उन्हें मैं चिट्ठियां देकर भेज दूंगा, कि तुम्हारा दान यरूशलेम पहुंचा दें। और यदि मेरा भी जाना उचित हुआ, तो वे मेरे साथ जाएंगे'' (1 कुरिन्थियों 16:3, 4)। इन प्रतिनिधियों का चयन यरूशलेम में दान ले जाने के लिए होना था (ध्यान दें कि पौलुस ने अपने आप जाने पर अधिक ज़ोर नहीं दिया)। निस्संदेह यही निर्देश उन सभी मण्डलियों को भेजे गए थे जिन्होंने चन्दे में योगदान दिया (देखिए 2 कुरिन्थियों 8:19, 23ख)।

पौलुस का संकल्प था कि वह इसे किसी भी प्रकार बदनामी का कारण नहीं बनने देगा। अपने पत्र के अगले भाग में कुरिन्थियों को लिखते हुए, उसने एक भाई की बात की जिसे यरूशलेम में चन्दा ले जाने में सहायता के लिए चुना गया था: ''और इतना ही नहीं, परन्तु वह कलीसिया से ठहराया भी गया कि इस दान के काम के लिए हमारे साथ जाए

और हम यह सेवा इसलिए करते हैं, कि प्रभु की महिमा और हमारे मन की तैयारी प्रगट हो जाए'' (2 कुरिन्थियों 8:19)। फिर पौलुस ने बताया कि उसने ऐसा करने का सुझाव क्यों दिया था: ''हम इस बात में चौकस रहते हैं, कि इस उदारता के काम के विषय में जिस की सेवा हम करते हैं, कोई हम पर दोष न लगाने पाए। क्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट भी भली हैं हम उन की चिन्ता करते हैं'' (2 कुरिन्थियों 8:20, 21)। पौलुस को न केवल इस बात की चिन्ता थी कि परमेश्वर ने क्या सिखाया; बल्कि उसे यह भी चिन्ता थी कि लोगों के मन में क्या विचार आ सकते हैं!

जब यह सुझाव दिया जाता है कि धन का प्रबन्ध सावधानी से होना चाहिए तो कई बार लोग परेशान हो जाते हैं। कइयों को बुरा लगता है और वे पुकार उठते हैं, ''यदि लोगों को मुझ पर भरोसा नहीं, तो मैं पद त्याग देता हूं!'' पौलुस ने किसी को यह नहीं कहा कि वह उस पर केवल इसलिए भरोसा करे ''क्योंकि वह एक प्रेरित था''; बल्कि, उसने वह सब इसलिए किया ताकि चन्दे के पैसे के गलत इस्तेमाल के आरोप की अफ़वाहें न फैलें।

हाल ही के वर्षों में, संसार में धार्मिक ठगों की बात सामने आई है जो उन पर संदेह न करने वाले लोगों के कारण धनी हो जाते हैं। कई लोगों ने निष्कर्ष निकाल लिया कि धर्म में सब कुछ ठगबाज़ी है। हममें मसीह के धर्म के विषय में संसार को इस प्रकार सोचने देने का साहस नहीं है। प्रभु के कार्य में जब भी धन लिप्त होगा, हम अधिक सचेत नहीं रह सकते। हमें तो ''जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उनकी चिन्ता'' (रोमियों 12:17) करनी है।

झगड़ा (20:3-5)

पौलुस यरूशलेम जाने के लिए तैयार था, परन्तु सामान्य की भांति शैतान उसके उद्देश्यों को बिना संघर्ष के पूरा नहीं होने देना चाहता था।[24] लूका ने उल्लेख किया (थोड़ा बहुत अनौपचारिक) कि ''जब ... [पौलुस] जहाज़ पर सूरिया[25] की ओर जाने को था, तो यहूदी उसकी घात में लगे[26]'' (आयत 3क)। ये वही यहूदी होंगे जो इस प्रेरित को गल्लियो के सामने लाए थे और व्याकुल हुए थे (18:12–17); यदि वे पौलुस को वैधानिक तरीकों से खत्म नहीं कर पाते, तो उन्होंने अवैधानिक तरीकों से कोशिश करनी थी। हमें पक्का पता नहीं है कि षड्यन्त्र क्या था। पौलुस ने सम्भवत: पहले की तरह किंख्रिया से ''सूरिया की ओर'' जाने की योजना बनाई होगी (18:18)।[27] शायद पौलुस को कुरिन्थुस और किंख्रिया में से गुजरते हुए पहाड़ी क्षेत्रों में लूटकर[28] मार देने का षड्यन्त्र था; यह भी हो सकता है कि उन्होंने उसे बन्दरगाह पर पकड़ने या जहाज पर से समुद्र में फैंकने की योजना बनाई हो।

एक बार फिर, परमेश्वर के पूर्वप्रबन्ध के कारण पौलुस को उनके षड्यन्त्र का पता चल गया, इसलिए उसने जल्दी से अपनी योजनाएं बदल लीं। उसके सहयात्री (त्रोआस में उसकी प्रतीक्षा करने के निर्देश पाकर 20:4, 5)[29] जहाज़ को वहां लगाने की योजना बनाकर आगे बढ़े, परन्तु पौलुस ने स्वयं ''यह सलाह की कि मकिदुनिया होकर लौट जाए

[जो कि मार्ग से, लम्बा पड़ता था]'' (आयत 3ग)।

निरपवाद, जब हम कुछ सही करने की कोशिश करते हैं, तो विरोध होगा ही; शैतान पूरी कोशिश करेगा कि ऐसा ही हो। जब जरूरतमंदों की सहायता करने की बात होगी, तो झगड़ा कभी अविश्वासियों की ओर से नहीं होगा (जैसे पौलुस के मामले में हुआ)। कई बार (मानें या न मानें) झगड़ा विश्वासियों की ओर से होता है।[30] इस प्रकार के हस्तक्षेप को बीच में न आने दें और ''जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ'' (गलतियों 6:10)।

पूरा होना (20:6)

यद्यपि आरम्भ में पौलुस की योजना मकिदुनिया को लौटने की नहीं थी, परन्तु मुझे विश्वास है कि फिर से उस इलाके में अपने भाइयों से मिलने का अवसर पाकर वह प्रसन्न था। पौलुस को यरूशलेम में अपने ऊपर आने वाले ख़तरों का पहले से ही पता था (रोमियों 15:31),[31] इसलिए इस प्रेरित के उस संगति से दूर जाते समय जिसे वह बहुत प्रेम करता था अश्रुपूर्ण विदाई की कल्पना करना कठिन नहीं है (देखिए प्रेरितों 20:22-25, 36-38)।

अन्ततः, पौलुस उनसे दूर चला गया। लूका ने लिखा, ''और हम अखमीरी रोटी के दिनों के बाद फिलिप्पी से[32] जहाज पर चढ़कर पांच दिन में त्रोआस में ... पहुंचे''[33] (आयत 6)। शब्द ''अखमीरी रोटी के दिन'' फसह के पर्व को कहा गया है; लूका ने इसे वर्ष के समय (बसंत के आरम्भ) का संकेत देने के लिए इस्तेमाल किया।[34] ''हम'' शब्द पर ध्यान दें; लूका फिर से पौलुस के यात्री दल के साथ मिल गया।[35] पिछली बार लूका ने प्रथम पुरुष का प्रयोग तब किया था जब पौलुस व उसके सहयोगी दूसरी मिशनरी यात्रा में फिलिप्पी में पहुंचे थे (देखिए 16:11, 12, 40); भाव यह कि लूका फिलिप्पी में, भाइयों के साथ काम करता हुआ पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा में फिर से उसके साथ जाने के लिए रुक गया था। इसके बाद, लूका ने सम्भवतः पौलुस को उसकी मृत्यु तक नहीं छोड़ा (कुलुस्सियों 4:14; फिलेमोन 24; 2 तीमुथियुस 4:11)। पौलुस के लिए अपने पास लूका और तीमुथियुस को दोबारा पाना कितना उत्साहजनक होगा!

अगले पाठ में, हम त्रोआस में पौलुस और अन्यों की कहानी की बात करेंगे। परन्तु, अब के लिए, मैं जरूरतमंद संतों के लिए चन्दे की सफल प्राप्ति की आशा करता हूं। लूका ने बाद में कहा, ''जब हम यरूशलेम में पहुंचे, तो भाई बड़े आनन्द के साथ हम से मिले'' (21:17)। अगले दिन वे प्राचीनों से मिले (21:18), सम्भवतः चन्दा प्रस्तुत करने के समय (क्योंकि बाद में पौलुस ने इस उपहार को ''अपने लोगों को दान'' कहा, 24:17)। पौलुस की ''यरूशलेम के लिए सेवा'' स्पष्टतः ''पवित्र लोगों को'' पसन्द आई (रोमियों 15:31); सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा।

चन्दा आसानी से इकट्ठा नहीं हुआ था। इस कार्य को पूरा करने के लिए चार वर्ष से अधिक का समय लग गया परन्तु पौलुस विचलित नहीं हुआ; उसने इस कार्य को पूरा करके ही छोड़ा। अच्छे संकल्प ही काफी नहीं हैं। जब हम किसी अच्छे कार्य को आरम्भ

करते हैं तो हमें उसे पूरा करना चाहिए (लूका 14:28-30; 2 कुरिन्थियों 8:6, 11)। यीशु ने सारदीस की मंडली के भाइयों से कहा, ''जागृत रह ... क्योंकि मैंने तेरे किसी काम को अपने परमेश्वर के निकट पूरा नहीं पाया'' (प्रकाशितवाक्य 3:2)!

सारांश

हमने पौलुस के उदाहरण से अपने भाइयों के प्रति चिन्ता की आवश्यकता को देखा। यूहन्ना ने लिखा, ''पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है?'' (1 यूहन्ना 3:17)। वाक्यांश ''कंगाल'' में वे भौतिक आवश्यकताएं भी शामिल हैं जिन पर हम ज़ोर देते आ रहे हैं, परन्तु भावनात्मक और (सबसे आवश्यक) आत्मिक आवश्यकताएं भी हैं।

अपने पाठ को हर सम्भव व्यावहारिक बनाने के लिए, मैं पांच सिफारिशें करता हूं:

(1) संवेदनशील बनें; ध्यान रखें कि किसे किस चीज़ की आवश्यकता है

(2) किसी को आवश्यकता पड़ने पर अपने हृदय को कोमल रखें। कठोर बनना आसान है। (कोई कहता है, ''वे अपनी ही गलती से इन समस्याओं में घिरे हैं।'')

(3) आप किस प्रकार सहायता कर सकते हैं, इसके लिए ठोस व स्पष्ट योजना बनाएं।

(4) विरोध होने पर हैरान न हों। यदि आपके अपने भीतर से भी विरोध हो तो भी आश्चर्य न करें।

(5) जो योजनाएं आपने बनाई हैं, उन पर काम करते रहें। याद रखें: यदि हम केवल इतना ही *कहें*, ''तुम गरम रहो और तृप्त रहो,'' तो हमारे शब्दों का कोई अर्थ नहीं है (याकूब 2:16)।

मेरा मानना है कि चन्दा लेने का पौलुस का प्रमुख उद्देश्य कलीसिया में सम्बन्ध मजबूत करने में सहायता करना था। यदि दूसरों की सहायता के लिए मैं और आप अपने आपको समर्पित कर दें, तो प्रभु की देह में शान्ति व एकता लाने में हमारा बहुत बड़ा योगदान होगा!

प्रवचन नोट्स

यद्यपि इस पाठ का शीर्षक ''निर्धनों को स्मरण रखें'' है, परन्तु मैंने पवित्र लोगों अर्थात मसीहियों में पाए जाने वाले निर्धनों को ध्यान में रखा है। आप सभी निर्धनों को शामिल करने की इच्छा कर सकते हैं। आमतौर पर निर्धनों पर तरस करने के बारे में बाइबल बहुत कुछ कहती है। आरम्भिक जानकारी हेतु आपके लिए ये कुछ आयतें हैं: मत्ती 19:21;

लूका 14:13, 21; 19:8; 2 कुरिन्थियों 9:9; याकूब 2:2-6.

इस प्रवचन में, मैंने यरूशलेम के पवित्र लोगों में से जरूरतमंदों के लिए चन्दा इकट्ठा करने पर ज़ोर दिया है। यदि आप पौलुस की तीसरी यात्रा के निष्कर्ष को संक्षिप्त करना चाहते हों, तो आप ''पौलुस के अलविदाई टूर'' पर एक पाठ का प्रचार करें (अमेरिका में जब प्रसिद्ध संगीत कलाकार अपनी रिटायरमेंट की घोषणा करते हैं, तो वे आम तौर पर देश का ''अलविदाई टूर'' करते हैं)। मुख्य प्वांइट ये हो सकते हैं (1) एशिया को विदाई, (2) मकिदुनिया को विदाई, और (3) अखया को विदाई। आप ध्यान दे सकते हैं कि पौलुस दूसरी जगह मिलने के लिए ही एक जगह को ''अलविदा'' कहता था। इस कारण, जब वह एशिया से गया, तो उसकी योजना मकिदुनिया और अखया के लोगों से मिलने की थी (प्रेरितों 19:21)। जब वह अखया से गया, तो उसकी योजना यरूशलेम और रोम के लोगों से मिलने की थी (19:21, 22)। अलविदा कहना दुखदायी है; परन्तु यदि कोई परमेश्वर की योजना में रहता है, तो इस जीवन के अन्त में भी ''अलविदाई'' के बाद ''मिलना'' ही आता है! (यदि अपेक्षित हो तो आप यह ध्यान दिला सकते हैं कि ''अलविदाई टूर'' हमेशा ''अन्तिम टूर'' नहीं होते; कई बार कलाकार अपनी रिटायरमेंट के निर्णय को रद्द कर देते हैं। पौलुस *को लगा* कि वह यूनान और एशिया में फिर मसीही लोगों से नहीं मिल पाएगा, परन्तु स्पष्टत: वह मिला।)

पाद टिप्पणियां

[1]इस समय के दौरान पौलुस के लेखों रोमियों, 1 और 2 कुरिन्थियों से हम इस काल का पुनर्निर्धारण करेंगे। सम्भव है कि लूका ने इस समय का विवरण इसलिए नहीं दिया क्योंकि उन पत्रियों से यह विवरण पहले ही पता चल गया था। [2]वाक्य रचना को ध्यान से पढ़िए। यरूशलेम के *सभी* पवित्र लोग कंगाल नहीं थे, पर उनमें से *कुछ* थे। [3]आगे की घटनाओं से यह स्पष्ट हो जाता है। [4]अपने दूसरे सभी निर्णयों के लिए, मुझे विश्वास है कि पौलुस ने यह निर्णय लेने से पहले प्रभु की सलाह ली थी। [5] पृष्ठ 184 पर मानचित्र देखिये। [6]केवल यहीं पर ही उस घटना को लिखा गया है जब पौलुस ने परमेश्वर द्वारा दिए अवसर का लाभ नहीं उठाया। [7]पौलुस ने सम्भवत: यह पत्र तीमुथियुस से लिखवाया (2 कुरिन्थियों 1:1) [8]हम नहीं जानते कि वे दो अनाम भाई कौन थे, न ही यह जानते हैं कि पौलुस ने उनका नाम क्यों नहीं दिया। लूका, बरनबास, तीमुथियुस जैसे नाम सुझाये गए हैं। शायद यह प्रेरितों 20:4 में दी गई कलीसियाओं के दो संदेशवाहक थे। [9]पृष्ठ 184 पर मानचित्र देखिये। पिछली बार की अपेक्षा मकिदुनिया की यात्रा में इल्लुरिकुम में पौलुस के प्रयास अधिक सटीक बैठते हैं। [10]पौलुस को उनसे दोबारा मिलने का पूर्वानुमान नहीं था, इसलिए उसका समझाना लगभग वैसा ही था जैसा प्रेरितों 20:18-35 में मिलता है।

[11]शायद वह वहां सर्दी के महीनों में रहा, जब सफ़र करना कठिन होता था। [12]कई लोगों का अनुमान है कि गयुस, तितुस यूसतुस का तीसरा नाम था (18:7)। [13]स्पष्टत: पत्री तिरतयुस से लिखवाई गई थी (रोमियों 16:22) और सम्भवत: किंख्रिया की रहने वाली फीबे के हाथ रोम भेजी गई थी (रोमियों 16:1, 2)। (किंख्रिया कुरिन्थुस की बन्दरगाहों में से एक थी।) पुस्तक में एक दिलचस्प टिप्पणी यह है कि अक्विला और प्रिस्किल्ला रोम में वापस आ गए थे (रोमियों 16:3, 4); किसी समय वे अपना काम काज देखने के लिए इफिसुस छोड़कर रोम चले गए थे। [14]तीमुथियुस जिसका नाम प्रेरितों 4 अध्याय में मिलता है, रोमियों की पुस्तक लिखने के समय कुरिन्थुस में पौलुस के साथ था (रोमियों 16:21)। दोबारा, यदि प्रेरितों 20:4 वाला सोपत्रुस रोमियों 16:21 वाला सोसिपत्रुस है (''सोसिपत्रुस'' का छोटा रूप ''सोपत्रुस'' है), तो हमें निश्चित तौर पर पता चल जाता है कि कुरिन्थुस में पौलुस के साथ एक और प्रतिनिधि था। [15]जैसे पिछली पाद टिप्पणी में कहा गया है, यह रोमियों 16:21 वाला सोसिपत्रुस हो सकता है। [16]हम अरिस्तर्खुस से

पिछले पाठ में मिले थे। इस भाग में प्रेरितों 19:29 पर नोट्स तथा पाद टिप्पणियां देखिये। [17]सिकन्दुस का अर्थ है ''दूसरा।'' हो सकता है कि वह अपने पिता का दूसरा पुत्र हो या इससे यह संकेत मिल सकता है कि ''संख्या से थोड़ा अधिक'' और वह एक गुलाम था। रोमियों 16:22, 23 में तिरतियुस (अर्थात ''चौथा'') का उल्लेख मिलता है। [18]प्रेरितों 19:29 पर नोट्स तथा पाद टिप्पणियां देखिये। [19]तुखिकुस बाद में रोम में पौलुस के साथ था (इफिसियों 6:21; कुलुस्सियों 4:7) और उसके छूटने के समय उसके साथ गया (तीतुस 3:12; 2 तीमुथियुस 4:12)। [20]यह त्रुफिमुस वही है जिसे मन्दिर में ले जाने का बाद में पौलुस पर आरोप लगाया गया था (21:29)। पौलुस के जीवन के अन्तिम भाग में वह उसके साथ रहा (2 तीमुथियुस 4:20)।

[21]अखया की कलीसियाओं का प्रतिनिधित्व करने वालों में किसी का नाम विशेषतौर पर नहीं दिया गया। यह अजीब लगता है, क्योंकि इन प्रतिनिधियों के चयन का एक उद्धरण 1 कुरिन्थियों 16:3, 4 है। शायद कुरिन्थुस की कलीसिया ने पौलुस, या तीतुस या 2 कुरिन्थियों 8:18-23 वाले दो अनाम संदेशवाहकों को, या किसी और अनाम व्यक्ति को अपना प्रतिनिधित्व करने को कहा। [22]ऐसी सम्भावना बहुत कम लगती है, क्योंकि पौलुस टूर में समय-समय पर लोगों से अपने आप को अलग कर लेता था (20:5, 13, 14)। इस बात की अधिक सम्भावना है कि वे संदेशवाहक ही चंदा ले कर गए थे। [23]यदि सभी नहीं, तो अधिकतर पुरुष जिनका नाम दिया गया है, प्रचारक थे या प्रचारक बनने की शिक्षा ले रहे थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि यरूशलेम जाते हुए पौलुस ने उन्हें कुछ शिक्षा देने के अवसर का लाभ उठाया। एक और सम्भावना मुझे आकर्षित करती है: अन्य जाति शिष्टमंडल का यरूशलेम में जाने का एक उद्देश्य इन लोगों द्वारा अपने यहूदी भाइयों के हाथों में धन देकर *व्यक्तिगत रूप से* ''धन्यवाद'' कहना था। यदि सम्भव हो तो ''इसे व्यक्तिगत रखने'' का विचार अच्छा है। [24]पौलुस को मकिदुनिया में क्लेश सहना पड़ा था (2 कुरिन्थियों 7:5); अब उसे अखया में लड़ाइयों का सामना करना पड़ा। [25]पौलुस का अन्तिम लक्ष्य यरूशलेम जाना था। परन्तु स्पष्टत: जो जहाज़ मिला वह सूरिया को जाने वाला था। पौलुस की आरम्भिक योजना अन्ताकिया के बारे में बताने के लिए सूरिया जाने और फिर दान लेने के लिए यरूशलेम में जाने की थी। [26]यहूदियों के और षड्यन्त्रों के लिए, देखिये प्रेरितों 9:24; 23:16; 25:3. देखिये 2 कुरिन्थियों 11:26। [27]सुझाव दिया गया है कि पौलुस ने फसह के लिए यरूशलेम जाने वाले यहूदी तीर्थ यात्रियों के जहाज़ में जाने की योजना बनाई थी। परन्तु क्योंकि शास्त्र कहता है कि पौलुस ने फलस्तीन नहीं (जहां यरूशलेम था) बल्कि ''*सूरिया* की ओर'' (जहां अन्ताकिया था) जाने की योजना बनाई थी, इसलिए यह बहुत कम सम्भव लगता है। [28]हम नहीं जानते कि यहूदियों को चंदे का पता था या नहीं, परन्तु इसे गुप्त रखने का कोई तरीका नहीं होगा। यदि यहूदी लोग पौलुस को लूट लेते (या किसी से लुटवा देते), तो उसकी मृत्यु का कारण आपराधिक होना था, धार्मिक नहीं। [29]लूका ने विशेषतौर पर यह नहीं कहा कि संदेश लाने वाले वे लोग पौलुस से कब जुदा हुए। जिस दृश्य का उल्लेख है वह एक सम्भावना है। हम तो यह सुनिश्चित भी नहीं कर सकते कि जिन सात लोगों का नाम दिया गया है वे सभी त्रोआस में गए भी थे या नहीं। व्याकरण के हिसाब से, आयत 5 में ''वे'' शब्द आयत 4 में उल्लेखित *दो* अन्तिम लोग हो सकते हैं, परन्तु सभी सातों सम्भवत: त्रोआस में गए। [30]कुछ भाई यरूशलेम के पवित्र लोगों के कंगालों के लिए चंदे के इस्तेमाल को यह सुझाव देने के लिए करते हैं ''कलीसियाई कोष'' से केवल मसीही लोगों की ही सहायता हो सकती है, और वह भी यदि वे ''निस्सहाय'' हों। इस पूरे पाठ में, मैंने यह जोर देने की कोशिश की है कि चंदा करने का उद्देश्य केवल पीड़ितों को राहत देना नहीं (यदि यरूशलेम के कंगाल मसीही भूखे मर रहे थे, तो चंदा पूरा होने से पहले ही वे मर गए होते), बल्कि स्नेह तथा सम्मान दिखाने के लिए है। हमारे लिए इस प्रकार का स्नेह कलीसिया के सदस्यों तथा गैर सदस्यों के साथ दिखाना आवश्यक है, इससे कम नहीं।

[31]फिर, पौलुस ने जब प्रेरितों 20:22 में खतरों की बात की, तो मकिदुनिया छोड़ने से लेकर वह केवल एक ही नगर (त्रोआस) में था। इसलिए, ''प्रत्येक नगर'' में मकिदुनिया के एक या अधिक नगर शामिल होंगे। [32]वे वास्तव में फिलिप्पी की बन्दरगाह, नियापुलिस से जहाज़ पर बैठे होंगे (16:11, 12)। [33]पहले, एजियन सागर पार करके उस बिंदु तक पहुंचने के लिए पौलुस को केवल दो दिन लगे थे (16:11); उस समय सम्भवत: हवायें शान्त थीं, और इस बार विपरीत दिशा में। [34]शास्त्र में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि लूका और अन्य मसीहियों ने इस पर्व को मनाया। एक अन्यजाति होने के नाते, लूका ने निश्चित ही यहूदी पर्व नहीं मनाया होगा। [35]''हम'' शब्द में प्रेरितों 20:4 में दिए गए नामों लूका, तीतुस और जितने भी दूसरे

लोग शामिल होंगे, परन्तु इनमें निश्चित तौर पर लूका तो था ही। एक बार फिर, लूका ने पूरा विवरण नहीं दिया। क्योंकि पौलुस की आरम्भिक योजना मकिदुनिया में लौटने की नहीं थी, इसलिए सम्भव है कि उसकी आरम्भिक योजना लूका और अन्य लोगों के साथ त्रोआस में मिलने की थी; या शायद लूका उन अनाम भाइयों में से एक था जो तीतुस के साथ कुरिन्थुस में गए थे (पाद टिप्पणी क्रम 8 देखिये), पौलुस के साथ मकिदुनिया में लौट कर फिलिप्पी जाने के लिए जहाज़ में बैठ गए थे।

हमें निर्धनों के लिए क्या करना चाहिए?

उन्हें स्मरण रखें:

''केवल यह कहा, कि हम कंगालों की सुधि लें, और इसी काम को करने का मैं आप भी यत्न कर रहा था'' (गलतियों 2:10)।

उन्हें सम्मान दें:

''हे मेरे प्रिय भाइयो, सुनो; क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि विश्वास में धनी, और उस राज्य के अधिकारी हों, जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनसे की है जो उससे प्रेम रखते हैं? पर तुमने उस कंगाल का अपमान किया ...'' (याकूब 2:5, 6)।

उनकी सहायता करें:

''क्योंकि मकिदुनिया और अखया के लोगों को यह अच्छा लगा कि यरूशलेम के पवित्र लोगों के कंगालों के लिए कुछ चन्दा करें'' (रोमियों 15:26)।

''यदि कोई भाई या बहिन नङ्गे उघाड़े हों, और उन्हें प्रतिदिन भोजन की घटी हो और तुममें से कोई उन से कहे, कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो; पर जो वस्तुएं देह के लिए आवश्यक हैं वह उन्हें न दें, तो क्या लाभ?'' (याकूब 2:15, 16)।

उन्हें सिखाएं:

''कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं'' (लूका 4:18)।

उन्हें निमन्त्रण दें:

''परन्तु जब तू भोज करे, तो कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और अन्धों को बुला'' (लूका 14:13)।